राष्ट्रीय धरोहर (कहानी)

कई दिन के बाद कर्फ्यू में ढील दी गई थी। वह भी सुबह आठ बजे से दिन के दो बजे तक। फिर भी लोगों में पुलिस की दहशत थी। सुबह कर्फ्यू में ढील के बावजूद बिस्कुट लेकर लौट रहे बच्चों को मुर्गा बना दिया गया था। आज कर्फ्यू में ढील का पहला दिन था। बाजार में सब्जी और परचून की दुकानों पर इतनी भीड़ उमड़ पड़ी थी कि जैसे मेला लगा हो। कई दिन के बाद भयावह सन्नाटा टूटा था। ग्यारह बज गए थे। मगर नवम्बर की धूप में ज्यादा गर्मी नहीं थी।

अरविन्द नहा धोकर बैठा था। खिड़की से ही सारा नजारा देख रहा था। तभी एक स्कूटर उसके घर के आगे आ कर रुका। उसने देखा वर्मा था। वर्मा और इस समय? मगर उसे पता था कि वर्मा के पैर घर में नहीं टिकते हैं। वह अपना कैमरा कंधे पर लादे-फांदे ऊपर आ धमका।

'कैसे हैं?' वर्मा ने पूछा, 'कोई दिक्कत तो नहीं हुई?'

'नहीं। सब ठीक है इधर। कर्फ्यू तो कर्फ्यू है ही। पुलिस और सेना दोनों का ही राउंड होता रहता है। रात को तो जैसे ब्लैक आउट हो जाता है।... मगर यह तुम्हारे सिर पर पट्टी कैसी बंधी है?'

'अयोध्या की निशानी है।'

फिर उसने अयोध्या काण्ड के कुछ दुर्लभ फोटो दिखाए। दास्तान सुनाई। और बोला,

'चलो बाहर घूम आएं!'

'कर्फ्यू में ढील दो बजे तक है।' अरविन्द ने घर के बाहर जाने में अनिच्छा प्रदर्शित करते हुए बाहर की ओर देखा।

'दो बजने में तीन घंटे हैं।' कुछ और लोगों की भी कुशल क्षेम मालूम कर लें। उठो, दो से पहले यहां छोड़ दूंगा।

अरविन्द उसे मना न कर सका। वह उठा खड़ा हुआ। मोजे-जूते पहन कर नीचे उतर आया। स्कूटर टुड-टुड करके स्टार्ट हुआ तब वह पीछे की सीट पर बैठ गया था।

'पहले मीराबाई मार्ग चलते हैं। वर्मा के निश्चयात्मक ढंग से कहा!

मगर कुछ दूर जाने के बाद उसने स्कूटर सूचना विभाग की तरफ मोड़ दिया। इस इलाके में लोगों का आवागमन कम था। इसलिए स्कूटर की स्पीड साठ से ऊपर थी। और बात ही बात में स्कूटर बनारसी बाग के फाटक के पास पहुंच गया।

'आज बंद है।' चौकीदार न फाटक न खोलने के अंदाज में कहा। 'हम घूमने नहीं आए हैं। आपके डायरेक्टर से मिलना है।' वर्मा ने कहा और स्कूटर फाटक से एकदम सटा दिया।

चौकीदार ने फाटक खोल दिया।

भट-भट करता स्कूटर डायरेक्टर के निवास की ओर न ले जाकर उसने बनारसी बाग परिसर में झोंक दिया। अरविंद ने कहा भी, 'बंद है यार, कहां जा रहे हो?'

बंद है तभी तो सामग्री मिलेगी।' फिर उसने एक पत्थर की बड़ी सी प्राचीन प्रतिमा में से निकलते पीपल के पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, 'देखा। यह है हमारी राष्ट्रीय धरोहर!'

'कौए की बीट का करिश्मा है यह।' अरविन्द ने हंसते हुए कहा। उसने इसमें कोई विशेष आश्चर्यजनक बात नहीं समझी।

वर्मा ने स्कूटर रोका। क्लिक-क्लिक दो बार स्नैप मार लिए। किसी ने नहीं देखा। चारों तरफ सन्नाटा था। पिंजड़ों में जानवर भी नहीं थे।

उधर से घूम कर वे राज्यसंग्रहालय की ओर निकल पड़े। दो गार्ड और एक चौकीदार सड़क पर खड़े खुसर-पुसर कर रहे थे। उन्होंने इन दोनों को स्कूटर से घूमते देखा मगर रोका नहीं। न कुछ कहा। न संदिग्ध नजरें डालीं। मछलीघर के सामने की बारादरी की ओर स्कूटर मोड़ते हुए उसने उत्साहित स्वर में जोर से कहा, 'यह देखो, यहां भी राष्ट्रीय धरोहर की ऐसी तैसी हो रही है!'

अरविन्द बात समझ नहीं पाया। वहां कोई ऐतिहासिक मूर्ति नहीं थी। उसने इधर-उधर खोजी निगाह दौड़ाई तो देखा बारादरी के सामने तोप खड़ी है। उस तक आने वाली सड़क के किनारे बैंच पर दो व्यक्ति बैठे थे। पास-पास। सटे-सटे। एक युवती और एक युवक। साफ सुथरे कपड़े पहने।

अरविन्द ने झट सोचा, बाहर गेट पर तो वह बता रहा था बंद है। और संग्रहालय के पास गार्ड और चौकीदार जो खुसर-फुसर कर रहे थे, वे क्यों कर रहे थे? वे इसीलिए कह रहे होंगे। मगर उन्हें यहां बैठने से रोकना चाहिए था। कर्फ्यू में ढील और इतना एकांत! ऐसी की तैसी शायद फिर भी नहीं हुई थी। वाकई हमारा युवक वर्ग राष्ट्रीय धरोहर है। इस कर्फ्यू में भी उसने और एकांत की जरूरत से बनारसीबाग को चुना था।

वर्मा ने इतनी जोर से कहा था, 'यहां भी राष्ट्रीय धरोहर की ऐसी की तैसी हो रही है।' जिसे इन दोनों ने भी सुन लिया था। युवती ने अपना मुंह छिपा लिया था। उन लोगों ने अपने पर ऐसा साहित्यिक व्यंग्य शायद कभी नहीं सुना होगा। वह व्यंग्य युवती को गुदगुदाया होगा। क्योंकि वह मुस्कुराई थी। उसे पहली बार पता लगा था कि वह राष्ट्रीय धरोहर भी है। बहुत मूल्यवान है। इसलिए उसके चेहरे पर लज्जा के साथ-साथ गर्व की मुस्कान भी तैरी थी। और उस युवक ने अपने को अवश्य महमूद गजनवी समझा होगा। इसलिए उनके चेहरे पर तल्खी आ गई थी। वह सोचने लगा होगा, मैं जिस मंदिर को ध्वस्त करने जा रहा हूं उसे राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने वाले ये काफिर कहां से आ गए।

अरविन्द ने उनकी ओर से अपनी आंखें हटा ली थीं। जानबूझ कर उसे अनदेखा करना ही अच्छा समझा था। शायद उसे अपने पिछले दिन याद आ गये थे। या इनको डिस्टर्ब नहीं करना चाह रहा था।

स्कूटर उनके आगे से निकल कर बारादरी के पास रुक गया था। अरविन्द उतरा। वर्मा भी उतर गया। और उसने तुरन्त बारादरी की ओर देखते-देखते अपना कैमरा निकाल लिया।

'रहने दो। रहने दो।' अरविन्द ने कहा।

'देखते रहिए!' शरारत से हंसते हुए वर्मा बोला।

अरविन्द चुप हो गया। अरविन्द को उसकी शरारत में बचकानापन नजर आया। उसकी नजर उधर चली गई जहां वह युगल बैठा था। युवती पहले तो उनकी ओर तिर्छी दबी-दबी निगाहों से देखती रही थी, पर कैमरा देखते ही उसने अपना मुंह दूसरी ओर घुमा लिया था, ताकि उसकी सूरत कैमरे में न आ जाए। अब उसका खुला-खुला सिर, संवरा हुआ जूड़ा और मांसल पीठ दिखाई पड़ रही थी।

वर्मा ने अपने कैमरे में झांका और बारादरी के एक कोने के पास खड़ा हो गया। बारादरी के एक पखवे पर लिखा हुआ था, 'बारादरी गिर रही है। इसके नीचे ने बैठें। आज्ञा से- निदेशक।'

अरविन्द का ध्यान तुरन्त संग्रहालय के सामने खड़े दो आर्म-गार्डों और चौकीदार की ओर गया। सुरक्षा के लिए वे वहां खड़े खुसर-फुसर कर रहे थे। खूबसूरत राष्ट्रीय धरोहर को क्षति पहुंचाने के लिए महमूद गजनबी अवसर की तलाश में था।

वर्मा के कैमरे की क्लिक की आवाज से मैं उसकी ओर घूमा। वह बहुत प्रसन्न था। उसने एक और स्नैप मार लिया था। फिर उसने बारादरी के गिरे कोने की ओर कैमरा घुमाया और एक और क्लिक हुई।

उसने नाचते हुए मोर की तरह गर्व से अपने चारों ओर देखा और कैमरा गले में लटका कर स्कूटर, स्टार्ट करते हुए पूछा, 'इस पर आर्टिकल लिखेंगे?'

अरविन्द ने ऐतिहासिक बारादरी के गिरते हुए भाग को गौर से देखा और युवती की ओर निगाह फेंकी। उसके चेहरे पर लालिमा फैली हुई थी, और हल्की सी मुस्कान उस लालिमा को और गाढ़ी कर रही थी। वह समझ रही थी कि उसकी फोटो खींच ली गई है।

सर्वत्र सन्नाटा ही सन्नाटा था। पेड़ पर बैठा कोई पक्षी अजीब मीठी आवाज में बोलता हुआ उड़ गया था। संग्रहालय के सामने गार्ड अभी भी खड़े थे। उनकी रसिक निगाहें भी बेंच पर बैठे युगल पर थीं।

और स्कूटर के पीछे बैठा अरविंद सोच रहा था कि वह वर्मा भी अजीब आदमी है। इस पर आर्टिकल लिखने को कह रहा है।

भारत जोड़ने वाले गिनेचुने हैं तोड़ने वाले अनेक

महाराष्ट्रवासी थे बाबा आम्टे। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी कुछ रोगियों की सेवा में लगा दी। उन्हें उम्मीद जगाई कि वह जिंदगी को खुशी से जी सकते हैं। इसलिए अपने आश्रम का नाम दिया आनंदवन। वह एक तरह से कुष्ठ रोगियों की ही बस्ती थी। बाबा ने नारा दिया था 'भारत जोड़ो'। कुछ दिनों पहले ही वह चल बसे। लेकिन उनका संदेश हमेशा हमारे बीच रहेगा।

फिलहाल तीन महाराष्ट्रवासी हमारे बीच में है। यानी बाल ठाकरे, उनके बेटे उद्धव और भतीजे राज। इन लोगों ने अपनी पूरी जिंदगी गैर महाराष्ट्रीय लोगों के खिलाफ नफरत फैलाने में लगा दी। वे उन लोगों को महाराष्ट्र से भगाने में लग गए। हजारों लोगों को महाराष्ट्र छोड़ कर भागना पड़ा। अपना कारोबार छोड़ना पड़ा। जाहिर है उनका नारा है- भारत छोड़ो। ये भी हिन्दुस्तानी हैं। मुझे उम्मीद है कि उनका संदेश हमेशा हमारे बीच नहीं रहेगा। उनके दुनिया छोड़ने से पहले ही मर जाएगा। एक गुजराती थे मोहनदास करमचंद गांधी। उन्होंने अपनी जिंदगी हिन्दुस्तानियों को यह सिखाने में लगाई कि वे सब एक हैं। वह जिंदगीभर मुसलमानों को भरोसा दिलाते रहे कि उनके साथ भेदभाव नहीं होगा। उन्होंने मुसलमानों और हिन्दुओं को बताया कि वे भारत माता की संतान हैं। यह अलग बात है कि जिस शख्स ने उनकी हत्या की वह भी हिन्दुस्तानी ही था।

एक और गुजराती हैं नरेन्द्र मोदी। वह गुजरात के कामयाब मुख्यमंत्री हैं। वह गांधीजी की सोच से इत्तेफाक नहीं रखते। उनका मानना है कि मुसलमान गड़बड़ियां फैलाते हैं। उन्हें सबक सिखाया जाना चाहिए। सो, गुजरात में जबर्दस्त दंगे हुए। उसमें हजारों बेगुनाह मुसलमानों को जान से हाथ धोना पड़ा। काफी लोगों को गुजरात छोड़ना पड़ा। जो रह भी गए उन्हें अपनी जान का डर बना रहा।

एक गुजराती और तीसता सीतलवाड़। वह जुझारूऔरत हैं। एक पीड़ित मुसलमानों के मामले उठाती रही हैं। उनकी खुद की जिंदगी खतरे में पड़ गई है। उनकी परवाह उन्होंने कभी नहीं की। वह गांधीजी को मानती हैं। मोदी को नहीं।

आंध्र प्रदेश की एक लड़की है सानिया मिर्जा। वह खूबसूरत है। कमाल की टेनिस खिलाड़ी है। एशिया में नंबर वन हैं। वह मुसलमान है। कुछ हिन्दुस्तानी मुसलमानों को दिक्कत है कि वह टेनिस खिलाड़ियों की ड्रेस क्यों पहनती हैं? स्कर्ट तक से वे भड़क उठते हैं। उन्होंने सानिया के खिलाफ फतवा जारी कर दिया। वह अब अपने देश में ही टेनिस नहीं खेलना चाहतीं।

एक हिन्दुस्तानी हैं, मकबूल फिदा हुसैन। वह मध्य प्रदेश के इंदौर से हैं। वह हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पेंटर हैं। उनकी एक पेंटिंग तो चार करोड़ में बिकी थी। लेकिन चाहने के बावजूद वह हिन्दुस्तान में नहीं रह रहे हैं। उन्हे दुबई में रहना पड़ रहा है। दरअसल, अपने ही देश के कुछ लोगों ने उन पर मुकदमा ठोंक रखा है। इस बिना पर कि उनकी पेंटिंग से धार्मिक भावनाएं आहत होती हैं। वे हुसैन साहब की गिरफ्तारी चाहते हैं। अपना काम शांति से करने के लिए उन्हें बाहर रहना पड़ रहा है। वह अपनी दिक्कतों को गालिब के बहाने बहाने बताते हैं-

या रब! वो न समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात।
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको जुबां और॥

अपने ही हिन्दुस्तानी लोगों को हम किस तरह परेशान कर सकते हैं, उनकी एक मिसाल हाल ही में मिली। भाजपा का छात्र संगठन है अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद यानी एबीवीपी। ये लोग दिल्ली यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर के ऑफिस में जबर्दस्ती घुस गए। वहां उनके साथ बदतमीजी की। उनका फर्नीचर तोड़ डाला। उनके गुस्से की वजह थी एमए में इतिहास का सिलेबस। उसमें रामानुजन का एक लेख पढ़ाया जा रहा था। वह लेख रामायण के अलग-अलग संस्करणों पर था। उनका मानना था कि उस लेख से श्रीराम का अपमान हुआ है। उनके अलावा और किसी को कुछ भी गलत नहीं लगा।

अगर कोई मुद्दा भी था, तो उस पर बात हो सकती थी। बहस-मुबाहिसा हो सकता था। लेकिन वह तो अपनी बात मारधाड़ से कहना चाहते थे। उन लोगों ने उसमें उपिंदर कौर का नाम भी जोड़ दिया। वह इतिहास की प्रोफेसर और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की बेटी हैं। यों उनका इस मामले से कुछ लेना-देना नहीं है। यह मसला पूरी तरह से बेईमानी और बदतमीजी का है। अजीब बात है कि भाजपा के किसी भी नेता ने इस गुंडागर्दी के लिए एक लफ्ज तक नहीं कहा। न लालकृष्ण आडवाणी ने और न राजनाथ सिंह या विजय कुमार मल्होत्रा ने। क्या यह 'भारत जोड़ो' है या 'भारत तोड़ो?'